B.A I Hons - Sub   28.9.20

भारतीय दर्शन

सांख्य - पुरुष के अस्तित्व के प्रमाण

जिस तत्त्व को सामान्यतः भारतीय दार्शनिकों ने आत्मा कहा है उसी तत्त्व को सांख्य ने पुरुष की संज्ञा से विभूषित किया है। पुरुष और आत्मा एक ही तत्त्व का विभिन्न नाम है। जो स्वरूप पुरुष का बतलाया गया है वही आत्मा का भी है। पुरुष का स्वरूप प्रकृति से बिल्कुल ही अलग है इसलिए पुरुष प्रकृति पर या प्रकृति से सम्बन्धित नहीं है। इसमें केवल चेतना रहती है। आत्मा के सम्बन्ध में जितनी बातें उपनिषद में कही गयी है, वे सभी सांख्य के पुरुष के सम्बन्ध में पाई जाती है। इसलिए पुरुष और आत्मा को एक ही नाम से पुकारते हैं।

सांख्य ने पुरुष को शुद्ध चैतन्य माना है। चैतन्य आत्मा में सदा निवास करता है। आत्मा को जाग्रत, सुषुप्तावस्था, स्वप्नावस्था सभी अवस्था में चेतना वर्तमान रहता है। चेतना ही पुरुष है। सांख्य का कहना है कि आत्मा या पुरुष शरीर से बिल्कुल भिन्न है भौतिक शरीर नश्वर है। आत्मा अभौतिक पदार्थ है उसका न तो आदि है और न

अतः इसलिए आत्मा का विनाश निश्चित नहीं है

सांख्य दर्शन पुरुष की सत्ता को प्रमाणित करने के लिए निम्न युक्तियों का सहारा लिया है

(1) संघातपरार्थत्वात् — सांसारिक वस्तुओं का स्वरूप यह है कि वह दूसरों के प्रयोजन के लिए निर्मित होता है। वह स्वयं प्रयोजन से बनी रहती है। उसका प्रयोजन स्वयं के लिए न होकर दूसरे के लिए होता है।

(2) सांख्य का मानना है कि जिस प्रकार एक मशीन को चलाने के लिए एक चालक की आवश्यकता होती है उसी तरह प्रकृति के विकास के लिए पुरुष या आत्मा जैसे चेतन पदार्थ चाहिए। प्रकृति अचेतन है जिसे आगे बढ़ाने के लिए प्रकाश की आवश्यकता है और यह कार्य किसी चेतन पूर्ण पदार्थ से ही संभव है और चेतन पदार्थ को पुरुष या आत्मा के नाम से पुकारते हैं।

(3) प्रकृति त्रिगुणात्मक है, क्योंकि उसमें सुख दुःख और उदासीनता उत्पन्न करने की शक्ति है और इन भावों को अनुभव करने वाला चाहिए। अतः पुरुष या आत्मा आवश्यक तौर रूप में है।

(4) मनुष्य मोक्ष या कैवल्य प्राप्त करने के लिए उसके पीछे दौड़ता है मोक्ष दुःखों के विनाश को कहा जाता है। मुक्ति की कामना भौतिक

विषयों के लिए सम्भव नहीं है। मनोविज्ञान को इस पर आपत्ति है कि ये मनोवैज्ञानिक तथ्य विल्कुल दिखाई पड़ते हैं। इस लिए मनोविज्ञान केवल पुरुष या आत्मा के अस्तित्व को साबित करती है।

5 प्रकृति से संसार की समस्त वस्तुओं का विकास होता है ये सभी जड़ हैं। प्रकृति भोक्ता नहीं हो सकता क्योंकि वह अचेतन है।

(6) मनुष्य अपने अनुभव के द्वारा ही पुरुष या आत्मा के अस्तित्व को पता लगाता है। मैं हूँ या नहीं हूँ। यह पुरुष को ही है। आज लोगों का कहना है कि संसार में कम से कम कुछ ऐसे हैं जो दुःख निवारण के लिए ~~xx~~ अनवरत तपस्या या आराधना करते हैं। और यह प्रमाण पुरुष या आत्मा से ही सम्भव है क्योंकि प्रकृति अचेतन होने के कारण मोक्ष का सही रास्ता खोज नहीं पाती है